महिलाएं भी लेने लगी हैं बड़े फैसले...

विमिन एम्पॉवरमेंट में फाइनैंशल इंडिपेंडेंस का रोल सबसे अहम माना गया है लेकिन लगता है अभी भारतीय महिलाएं इससे वंचित हैं। नीलसेन के सर्वे के अनुसार 77 पर्सेंट कामकाजी महिलाएं निवेश सबंधी निर्णय के लिए अपने पति अथवा पिता पर आश्रित हैं और अगर कामकाजी महिलाओं की बात करें तो सिर्फ 18 पर्सेंट कामकाजी महिलाएं निवेश संबंधी निर्णय स्वयं लेती हैं। आखिरकार ऐसी क्या वजह है कि महिलाएं इन्वेस्टमेंट संबंधी निर्णय नहीं लेती हैं? क्या इसकी वजह यह है कि वे सक्षम नहीं है और किसी तरह का रिस्क नहीं लना चाहती हैं । इस बारे में **सुधा श्रीमाली** ने बात की अलग-अलग फील्ड की स्वयंसिद्धांत से और उनका कहना था कि समाजिक स्थितियां तेजी से बदल रही है और वे अब वे बड़े फैसले भी लेने लगी हैं:

निर्णय नहीं लेतीं क्योंकि वे मर्दों के इगो को संतुष्ट करना चाहती हैं

विशाखा.एम. सीएमओ, केनरा एचएसबीसी ओबीसी लाइफ इंश्योरेंस

ऐसा बिल्कुल भी नहीं है कि महिलाएं कैपेबल नहीं हैं। असल में वे कई बार इस वजह से भी वित्तीय निर्णय नहीं लेती हैं क्योंकि वे मर्दों के इगो को संतुष्ट करना चाहती हैं। आप गौर करें तो घर के बजट से लेकर छोटे-मोटे खर्चों व शादी आदि में गोल्ड की शॉपिंग तक का निर्णय महिलाएं लेती हैं लेकिन जब बार निवेश व फाइनैंशल इंडिपेंडेंस की आती है तो वे पीछे हट जाती हैं। एम्पॉवरमेंट की बात करें तो वह 100 पर्सेंट फाइनैंशल इंडिपेंडेंस पर निर्भर है लेकिन बहुत कम महिलाएं हैं जो अपने लिए खुद रिटायरमेंट प्लान व हेल्थ प्लान खरीदने का निर्णय लेती हैं। असल में महिलाएं पुरुषों के मुकाबले इमोशनली बहुत मजबूत होती हैं और ऐसे में अगर वे फाइनैंशली पावरफुल हो जाएं तो उन्हीं कोई पीछे नहीं रख सकता। बस, इसीलिए पुरुषसतात्मक समाज ऐसा होने नहीं देता। हालांकि आज के दौर में ऑफिस व घर में महिलाओं को आजादी मिली है और यह फर्स्ट जेनरेशन कामकाजी महिलाएं एक अलग तरह की चुनौती झेल रही हैं।

सिर्फ पैसा कमाने से इंडिपेंडेंस नहीं आती

अदिति कोठारी, हेड ऑफ मार्केटिंग, डीएसपी ब्लेकरॉक इन्वेस्टमेंट

खुद निवेश नहीं करने की वजह यह है कि महिलाओं को सुरक्षा की चाहत रहती है और यही वजह है कि वह किसी भी प्रकार का जोखिम नहीं उठाना चाहती हैं। निवेश संबंधी निर्णय में पति का निर्णय प्रभावी होता है, चाहे वह कामकाजी महिला हों अथवा गैर-कामकाजी। महानगरों में रहने वाली 24 प्रतिशत अकेली कामकाजी महिलायों निवेश संबंधी निर्णय स्वयं लेती हैं, जबकि गैर-महानगरों में यह संख्या 20 प्रतिशत है। जहां तक गैर-कामकाजी महिलाओं का सवाल है तो निवेश संबंधी निर्णय लेने वाली महिलायें अधिकतर महानगरों में ही रहती हैं। मुझे लगता है मुख्य वजह खुद पर कॉफिडेंस नहीं होना व इंटरेस्ट नहीं लेना। ऐसा इसलिए होता है कि क्योंकि उनका पालन-पोषण इस तरह से किया जाता है। लेकिन इसमें बदलाव आ रहा है। सरकार द्वारा लड़कियों को भी संपत्ति में हक देने, उनकी सुरक्षा, शिक्षा व आज के ग्लोबल माहौल ने महिलाओं की स्थिति को बहुत तेजी से बदला है और वे पढ़ाई करने के बाद आत्मनिर्भर हो रही हैं।

महिलाएं मुख्यधारा में शामिल हो रही हैं

- स्वाति कुलकर्णी, फंड मैनेजर, यूटीआई म्यूचुअल फंड

महिलाओं को आजकल वह सब करने की आजादी है जो वह करना चाहती हैं। उन्हें अब कोई दबा नहीं सकता। ऑफिस हो या घर, सभी जगह उसके काम को पूरा अकनॉलेजमेंट मिलता है। हां, समाज के कुछ तबकों में अभी भी महिलाओं की दशा व दिशा में सुधार नहीं हुआ है लेकिन जिस तरह से उन्हें अधिकार दिए जा रहे हैं, वे उन्हें कभी न कभी पूरी तरह से सक्षम बनाएंगे। चूंकि महिलाएं बहुत ही भावुक होती हैं इसलिए ऑफिस व घर में बच्चों को लेकर अतिरिक्त सावधानी रखती हैं। अपना 100 फीसदी देने के चक्कर में वे वित्तीय निर्णयों से खुद को पीछे हटा लेती हैं क्योंकि वे इसके लिए समय नहीं निकाल पातीं हैं। लेकिन अब जिस तरह से गर्ल्स का लालन-पालन हो रहा है उसमें उनकी प्रोफेशनल अप्रोच से लेकर सोसायटी में अपनी स्थिति को लेकर वह क्लियर है।